:- उपसंहार -:

उपसंहार

डा.धर्मवीर भारती रोमानी प्रवृत्ति के एक ऐसे साहित्यकार हैं जिनके व्यक्तित्व में पाश्चात्य-चिंतन, प्राचीनता के साथ आधुनिकता, बौध्दिकता के साथ भावुकता आर्यसमाजी विचारधारा के साथ वैष्णवभावना, संघर्षशीलता, वैचारिकता का सम्मिश्रण है। कवि, उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार, निबन्धकार, शोधकर्ता, आलोचक, पत्रकार आदि कई रूपों में पहचाने जानेवाले डा. धर्मवीर भारती आखिर एक व्यक्ति रूप में कैसे हैं ? इसको खोजने का प्रयास करनेपर पता चलता है कि उनके व्यक्तित्व से सरलता, सादगी, गरिमा, स्वावलंबन, संकोच, कल्पनाप्रियता अंतर्मुखी वृत्ति, घुमक्कडी वृत्ति आदि कई गुण झलकते हैं। उन पर आर्यसमाजी संस्कार हैं इस बात का ज्ञान हमें उनके 'धर्मवीर' नाम से ही हो जाता है। लेकिन उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को परखने के बाद ही पता चलता है कि, केवल इस लघुशोध-प्रबन्ध के विवेचित उपन्यास में ही नहीं बल्कि अन्य कई रचनाओं में भी इलाहाबाद शहर का वर्णन इतनी बखूबी क्यों हुआ है ? जाहिर है कि, इलाहाबाद उनकी जन्मभूमि ही नहीं कर्मभूमि भी रही है। और अपनी जन्मभूमि एवं कर्मभूमि के प्रति भारती जी के मन में अनन्त प्रेम एवं लगाव है।

भारती जी का जीवन बचपन से गमों से भरा हुआ नजर आता है। पिताजी की असामयिक मृत्यु होने के कारण एक तो वे पितृस्नेह से विमुख हो गये थे और दूसरा जीवन का भार स्वयं को ही उठाना पड़ा। उनके स्नेह के लिए तरसनेवाले मन ने पत्नी के आँचल में सहारा ढूँढ़ने की कोशिश की किन्तु प्रथमत: उपेक्षा ही उनके नसीब हुई। उन्होंने जो भोगा, देखा उसी को उन्होंने अपने साहित्य में उभारने की चेष्टा की है। किन्तु उनकी विशेषता यही रही है कि, उनका साहित्य व्यक्तिगत बनकर नहीं रह चुका है। उन्होंने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को सामाजिक रूप देने का प्रयास किया है। अपनी एकांतिक पीड़ा को व्यापक मानवीय भावनाओं से जोड़ने का प्रयास किया है। अपने निजी प्रेम कथानकों

को पुनर्रचित कर आम जनता की संवेदनाओं से युक्त बनाने का प्रयत्न किया है। भारती जी सृजन धर्मिता में विश्वास करते हैं इसलिये ही शायद, जिस तरह अपने जीवन में एक पत्नी के बाद दूसरी पत्नी का सहारा ढूँढ़ते हैं, उसी तरह अपने उपन्यासों के नायकों को भी अनेक नारियों के संपर्क कर पुनः पुनः उभारने की चेष्टा करते हुए नजर आते हैं।

अनास्था के इस युग में विपत्तियों का सामना करते हुए प्राप्त परिस्थिति को भोगने की मानसिक तैयारी रखने का संदेश देते हैं। इस तरह भारती जी ने अपने व्यक्तिरूप को उस रूप में निहित साहित्यकार को जोड़ने का सफल प्रयास किया है। किन्तु ऐसा महसूस होता है कि, जीवन में अनुभवों की विपुलता होते हुए भी भारती जी ने ढ़ेर सारे उपन्यास लिखने की चेष्टा नहीं की है। उन्हें अपने जीवन के जो अनुभव अधिक असरे, प्रभावी महसूस हुए या जीवन की जिन घटनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए उनके मन को मजबूर किया और जिन घटनाओं ने उनके व्यक्तित्व एवं जीवनपर स्थायी प्रभाव डाला ऐसे ही अनुभवों पर आधारित कथानकों का निर्माण करने का प्रयास लेखक ने किया है। इसका मतलब यह कदापि नहीं कि, उनकी लेखन क्षमता सीमित कटघरे में ही दम तोड़ देती हो। ऐसा होता तो कम-से-कम लिखकर हिन्दी जगत में अधिक से अधिक प्रतिष्ठा पाना उनके नसीब नहीं होता।

'गुनाहों का देवता' की कथावस्तु में मध्यवर्गीय जीवन की कहानी तीन खण्डों में विभाजित है। इस उपन्यास की कथावस्तु की घटनाएँ अत्यंत गतिशील है। इसकी कथावस्तु अत्यंत रोचक, कौतूहलवर्धक है। मुख्य कथा में और रंग भरने, उस की सहाय्यता करने का काम अन्य सहाय्यक कथाओं ने किया है। सिर्फ डेढ़ साल की अवधि में घटीत घटनाओं का अत्यंत सुंदर चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। इस प्रकार डा. धर्मवीर भारती जी का 'गुनाहों का देवता' उपन्यास अपने ढ़ंग का अकेला उपन्यास है। इस उपन्यास से लेखक के अपने अनुभव दृष्टिगोचर होते हैं। यही वजह है कि, यह उपन्यास प्रभावशाली बन गया है।

इस उपन्यास का नायक चन्दर है। उसके जीवन में तीन नारियाँ - सुधा, पम्मी और बिनती - आती है। तीनों उससे प्रेम करती हैं लेकिन वह केवल सुधा को ही चाहता है। इन पात्रों से भारती जी ने स्त्री-पुरुष के अंर्तबाह्य सम्बन्धों को परखा है। भारती जी पात्र तथा चरित्र-चित्रण में बिलकुल सफल रहे हैं। उन्होंने सभी पात्रों के प्रति इमानदारी बरती है।

भारती जी ने इस उपन्यास में देश-काल तथा वातावरण की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया है। इसमें सिर्फ डेढ़ साल की कहानी है जिसमें कहीं -कहीं प्राकृतिक चित्रण, इलाहाबाद का वर्णन और दिल्ली, बरेली आदि का चित्रण आया है। अधिकतर घटनाएँ शामों में घटती है। फिर भी एक रोमानी वातावरण फैलाने में भारती जी सफल हुए हैं।

संवाद तथा भाषाशैली की दृष्टि से यह उपन्यास अत्यंत सफल है। इसमें पात्रानुकूल भाषा के विविध रूपों को अपनाते हुए चित्रात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है। भाषा में कहावतें - मुहावरें, सुक्तियाँ, रूपक, अलंकार, विशेषण आदि का प्रयोग किया गया है। फिर भी कहीं-कहीं संवाद बोझिल एवं नीरस भी बन गये हैं। फिर भी इस उपन्यास में शब्दों के रूप, शब्द सौन्दर्य के जितने साधनों का प्रयोग किया गया है उसी से इसकी भाषा सहज-सुन्दर बन गई है। इस उपन्यास के संवाद कथानक को गतिशील बनाते हैं। इसमें कई शैलियों का प्रयोग भी किया गया है। इन सभी की वजह से इस उपन्यास के संवादों की सहजता में निखार आया है।

इस उपन्यास में वैसे तो कई उद्देश्य निहित हैं फिर भी इसका मुख्य उद्देश्य स्त्री-पुरुष के अंर्तबाह्य सम्बन्धों को परखना रहा है। लेकिन इसके साथ ही प्रेम के विविध रूपों को दर्शाया है। बर्टी जैसे पात्रों के माध्यम से चन्दर तक को विवश कर लेखक ने परिस्थितियों के फेर में आदमी किस तरह पीस जाता है, इसका चित्रण किया है। इस प्रकार धर्मवीर भारती जी अपने उपन्यास को उद्देश्य तक ले जाने में सफल हुए हैं।

शीर्षक का चयन भी भारती जी ने सफलता से किया है। यह शीर्षक अत्यंत आकर्षक एवं सार्थक है। इसको सफल बनाने के लिए लेखक ने कई पात्रों के मुख से मुख्य पात्र चन्दर के लिए 'देवता' कहलाया है। वैसे तो 'देवता' पवित्र होते हैं। उनके साथ 'गुनाह' का सम्बन्ध नहीं होता किन्तु लेखक ने चन्दर, जिसे अन्य सभी पात्र 'देवता' मानते हैं, उसी से गुनाह करवाये हैं और यही वजह है कि वह 'गुनाहों का देवता' बन गया है। इसलिये यह शीर्षक सार्थक है।

धर्मवीर भारती जी के 'गुनाहों का देवता' उपन्यास में सभी औपन्यासिक तत्त्व निहित है। कुछ आलोचकों को उपरी तौरपर यह उपन्यास शिल्पप्रधान नहीं प्रतीत होता है किन्तु हर तत्त्व की दृष्टि से उपन्यास की परतें खोलने की कोशिश करने पर हर एक के पीछे छिपा हुआ तत्त्व दृष्टिगोचर होता है। केवल देशकाल-वातावरण अतिरिक्त रूप में चित्रित नहीं किया है और यह उचित भी है क्योंकि अतिरिक्त देश-काल तथा वातावरण के चित्रण से कथानक में शिथिलता आने की सम्भावना रहती है। वातावरण का उतना ही चित्रण किया है जितना आवश्यक है। कथानक की रोचकता बनाये रखने की दृष्टि से भी वातावरण का आधिक्य उचित नहीं है। अपने उद्देश्य की अवधारणा करने की दृष्टि से लेखक ने पात्रों को माध्यम बनाया है और उनके व्यवहारों को भी स्पष्टता से चितेरा है और अपने हर पात्र को आम आदमी की तरह जीते, हँसते-रोते, सुख-दुःख को भोगते रहते हुए दिखाया है। व्यक्तिगत दुःखों को अपने उपन्यास में प्रकाशित करते हुए भी लेखक ने इन्हीं पात्रों का आधार लिया है। मनोरंजक कहानी के साथ-साथ पाठकों में सुन्दर भावों को जागृत करने के लिए प्रेम जैसा प्रिय विषय तो चूना है, किन्तु उसके माध्यम से जीवन सम्बन्धी विविध पहलुओं का उद्घाटन भी किया है। स्त्री-पुरुषों के पारिवारिक, सामाजिक एवं यौन सम्बन्धों के सुखद एवं दुःखद परिणामों को उद्घाटित किया है। इस प्रकार लेखक ने शिल्पविधान की दृष्टि से अपने इस उपन्यास में सफलता पाते हुए तथ्यों तथा समस्याओं का निरुपण कर उनके समाधान को सांकेतिक करने की अपनी क्षमता को भी दर्शाया है।

इस प्रकार प्रेम की आदर्श धारणा को कल्पना के रंग में डूबोकर प्रस्तुत करनेवाला यह उपन्यास सभी दृष्टि से सफल कहा जा सकता है।